MA Sem III
CC - 12

Topic - Nature of edu. By. & its application

शिक्षा वस्तुतः मनुष्य के जीवन पद्धति (Style of life) में सार्थक परिवर्तन करने कि एक सात्विक प्रक्रिया है जिससे व्यक्ति समाज का एक उपयोगी सदस्य बन जाता है। शिक्षा का अंग्रेजी पर्यायवाची शब्द 'एडुकेशन' (Education) है जो लैटिन भाषा के 'एडुकेर' (Educare) शब्द से उत्पन्न माना जाता है। इसका अर्थ है शिक्षित करना या पालन-पोषण करना। अतः इस विचारधारा के अनुसार बालकों में निहित शक्तियों या क्षमताओं को उद्वेलित (Stimulated) कर उन्हें सही दिशा में विकसित करने की प्रक्रिया ही शिक्षा है। बालक में निहित क्षमताएँ दो प्रकार की हैं — (i) शारीरिक (Physical) तथा (ii) मानसिक (mental)। शिक्षा इन दोनों प्रकार के क्षमताओं के समुचित विकास का अवसर प्रदान करती है। अतः कह सकते हैं कि "शिक्षा वह प्रगतिशील प्रक्रिया है जो व्यक्ति की मनोदैहिक क्षमताओं के पूर्ण विकास में सहायता करती है।"

"Education is a progressive process which help an individual to develop his psycho-Physical capacities fully."

Pestalozzi के अनुसार — "शिक्षा मनुष्य की समस्त क्षमताओं का (पेस्टालॉजी) स्वाभाविक, प्रगतिशील तथा सिरोचहीन विकास है।"

"Education is the natural, progressive and harmonious development of all powers and faculties of the human beings."

John Dewey के अनुसार — "शिक्षा व्यक्ति की क्षमताओं का विकास है, जिनकी सहायता से वह अपने वातावरण पर नियंत्रण करता हुआ अपनी सम्भावित उन्नति को प्राप्त करता है।"

"Education is the development of all those capacities in the individual which enable him to control his environment and fulfil possibility."

Crow & Crow के अनुसार — "शिक्षा व्यक्तिकरण तथा समाजीकरण की वह प्रक्रिया है जो व्यक्ति के पूर्ण विकसित कर समाजोपयोगी बनाती है।"

"Education is an individualizing and socializing process that furthers personal advancement as well as social living."

अतः यह स्पष्ट है कि शिक्षा बालकों के सर्वांगीण एवं स्वाभाविक विकास के लिए अनुकूल परिस्थिति उत्पन्न करनेवाली प्रक्रिया है। सर्वांगीण विकास से तात्पर्य शारीरिक तथा मानसिक क्षमताओं का विकास है। लेकिन महात्मा गाँधी ने इन परिभाषाओं को समग्र (Comprehensive) नहीं माना है। उन्होंने शिक्षा का व्यवहार बहुत ही व्यापक अर्थ में किया है। इनके अनुसार सर्वांगीण विकास केवल शारीरिक तथा मानसिक विकास से ही नहीं बल्कि नैतिक विकास (moral development) से भी है। अतः शिक्षा वह प्रक्रिया है जो बालकों के शारीरिक, मानसिक तथा नैतिक तीनों पहलुओं के स्वाभाविक विकास में सहायता करती है। बापू के शब्दों में, "शिक्षा से मेरा अभिप्राय है बालक तथा व्यक्ति के अन्तःस्थित सुन्दरम विभूतियों का सर्वांगीण विकास— शारीरिक, मानसिक तथा नैतिक।"

"By education I mean an all round development drawing out of the best in child and man— body, mind & spirit." — M. K. Gandhi

इन परिभाषाओं से शिक्षा संबंधी निम्नलिखित बातें सामने आती हैं —

(क) शिक्षा एक प्रक्रिया (Process) है जिससे बालकों में निहित क्षमताओं के विकास में सहायता मिलती है।

(ख) शिक्षा का उद्देश्य बालकों का सर्वांगीण विकास है। सर्वांगीण विकास का तात्पर्य है शारीरिक, मानसिक तथा नैतिक या आध्यात्मिक विकास। इस प्रकार शिक्षा, त्रिमुखी प्रक्रिया (tridimensional process) है — शारीरिक शिक्षा, मानसिक शिक्षा तथा आध्यात्मिक शिक्षा। शारीरिक शिक्षा का उद्देश्य

बालकों की शारीरिक क्षमताओं को विकसित करके उन्हें शारीरिक रूप से स्वस्थ (Physically Sound) बनाना है। इसी तरह मानसिक तथा आध्यात्मिक शिक्षा का उद्देश्य क्रमशः मानसिक तथा आध्यात्मिक क्षमताओं को पूर्ण रूप से विकसित करके बालकों को मानसिक रूप से स्वस्थ (Mentally sound) तथा नैतिक रूप से स्वस्थ (Morally sound) बनाना है। अतएव, व्यक्तित्व के इन तीनों पहलुओं को पूर्ण रूप से विकसित करनेवाली प्रक्रिया ही शिक्षा है।

(3) शिक्षा बालकों की समस्त क्षमताओं का स्वाभाविक, प्रगतिशील एवं विरोधहीन विकास है। शिक्षा ऐसे अनुकूल वातावरण को उपस्थित करती है जहाँ बालकों की शारीरिक, मानसिक तथा नैतिक क्षमताओं का विकास विरोधहीन एवं पूर्ण रूप से संभव हो पाता है।